ऐसे थे मेरे सद्गुरू

पण्डित अमरनाथ

कुछ चमत्कारी लोग ऐसे होते हैं कि जो वह करते हैं आदर्श बन जाता है लोग उन्हीं की तरह सोचने भी लग जाते हैं।

मैं लाहौर में था। उन्नीस सौ बयालीस में लगभग कुछ गा भी लेता था। दत्ता जी ता से सीखता भी था, लाहौर रेडियो का सबसे युवा कलाकार माना जाता था, दिल्ली से अमीर खां साहिब का गाना एक बार कान में पड़ा परेशान हो गए साहिब, एक रेडियो तो खरीदना ही होगा, पैसे है नहीं, किसी तरह से दो सौ पचपन रुपये का एक छोटा सा रेडियो सेट जुटा लिया।

करीबन हर रविवार को अमीर खां को दिल्ली रेडियो से सुनते, उस्ताद अब्दुल वहीद खां तो लाहौर ही में थे उन्हें तो सनते देखते रहते ही थे।